केले के रोग एवं कीट

रोहित कुमार
शोध छात्र, उधान विभाग,
भगवंत विश्वविध्यालय, अजमेर, राजस्थान

रोग:

(1) पर्णचित्ती (लीफ स्पाट) रोग : यह रोग सर्कोस्पोरा म्यूसी नामक कवक के कारण होता है । इसमें पतता का अधिकांश भाग झुलस जाता है । रोग के प्रारम्भिक लक्षण ऊपर से तीसरी या चौथी पत्ती पर सूक्ष्म चित्तियों के रूप में प्रकट होते है। धब्बे हल्के पीले या हरी पीली धारियों के रूप में बनते है । जो पर्ण शराओं के समानान्तर होते हैं। ये धब्बे बाद में बड़े होकर आपस में मिल जाते है और सम्पूर्ण पत्ती झुलस जाती है और सूख कर लटक जाती है । फलों पर इस रोग का विशेष प्रकोप होता है । रोग की उग्रता की स्थिति में फलों के पकने की कोई निश्चितता नही होती है । इसलिए फलों को दूर बाजार तक नही भेजा जा सकता । फलों का रंग हल्का गेरूआ अथवा हल्का नारंगी हो जाता है ।

नियंत्रण

1. पौधे अवशेशों को एकत्र करके जला देना चाहिए ।
2. रोग के प्रारम्भिक लक्षण दिखाई देने पर 50 आक्सीक्लोराइड को 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रतिशत कॉपर एक लीटर पानी में) की दर से छिड़काव करें । इस घोल में दो प्रतिशत अलसी का तेल मिश्रित करना चाहिए जिससे केले की चिकनी पत्तियों पर दवा का घोल रूक सकें । अन्य उपयुक्त दवाएँ – मैंकोजेब (0.2 प्रतिशत) एवं कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) है।

(2) गुच्छा शीर्ष (बन्चीटाप) रोग' :–यह रोग केला वाइरस –1 नामक विशाणु द्वारा उत्पन्न होता है रोग का प्रसार केला एफिड " पेन्टालोनिया नाइग्रोनर्वेसा " नामक माहॅू कीट द्वारा होता है । रोग के लक्षण पौधों पर किसी भी अवस्था में देखा जा सकता है । पौधों के शीर्ष पर पत्तियों का गुच्छा बन जाता है । रोग के कारण पौधे बौने रह जाते है तथा बढ़वार रूक जाती है ।

नियंत्रण :

1. संक्रमित पौधे को निकालकर नष्ट कर दें 2. स्वस्थ व रोगी पौधों पर कीटनाशक दवा – डाईमिथोएट (125) मिलीलीटर प्रति लीटर का छिड़काव करना चाहिए ।
3. पुत्तियों का चुनाव स्वस्थ पेड़ों से किया जाना चाहिए ।

(3) श्यामवर्ण या फल विगलन (एन्थ्रैक्नोज) कवक जनित :

यह रोग मुख्य रूप से केले के गुच्छा भी प्रभावित हो जाता है । फल पकने की अवस्था पर फल का शीर्ष या नीचे का हिस्सा सड़ने लगता है ।

नियंत्रण :

किसी ताम्रयुक्त रसायन जैसे 50 प्रति त कापर आक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिभत की दर से एक सुरक्षात्मक छिडकाव बीमारी आने से पूर्व करना चाहिए । रोग फैल जाने के पश्चात कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से आवश्यकतानुसार 2–3 छिड़काव करना चाहिए ।

4. तना गलन या हर्टराट :– फंफूंदी जनित इस रोग के प्रकोप से निकलने वाली नई पत्तियाँ काली पडकर सड़ने लगती है । इससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है और पौधा पील पडकर सूखने लगता है ।

नियंत्रण :

मैंकोजेब के 0.2 प्रतिशत अथवा कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत केले पर छिड़काव आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तर पर करना चाहिए ।

कीट :

(1) केले का घुन (बीवील) : सुडी प्रकन्द में ही सुरंग बनाकर प्यूपा में बदल जाती है । प्यूपा से वयस्क कीट निकलता है जो रात्रि में प्रकन्द को खाता है फलस्वरूप प्रकन्द सड़ना प्रारम्भ कर देता है । इसका प्रकोप बरसात में अधिक होता है ।

1. इसकी रोकथाम हेतु स्वस्थ्य कंद/पुत्ती लगाने चाहिए । खेत से पुराने एवं सडे कंद तथा सूखी पत्तियों को नियमित रूप से निकलते रहना चाहिए ।
2 . नये पौधे लगाते समय गड्ढों को मैलाथियान डस्ट 50–60 ग्राम प्रति एकड़ की दर से उपचारित करना चाहिए ।
3. अधिक प्रकोप की स्थिति में एक मिलीलीटर डायमिथोएट प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए ।

(2) केले का भृंग (विटिल) : यह लाल भूरे रंग के छोटे आकार के भृंग है जो मुलायम पत्तियों तथा नये फलों को खुरचकर खातें है । जिससे पत्तियों एवं फलों पर खरोंच पड़ जाता है । इसका प्रकोप अप्रैल – मई से प्रारम्भ होकर सितम्बर अक्टूबर तक रहता है । इसके शिशु (ग्रब) भूमिगत जड़ो के पास मिलते है । पौधों के मध्य की पत्तियों जो अग्रभाग बनाती है , बुरी तरह क्षतिग्रस्त होती है ।

नियंत्रण :

1 केले की साफ – सुथरी खेती से इस कीट का आक्रमण कम हो जाता है ।
2. इसके प्रभावी नियंत्रण हेतु क्वीनालफॉस 2 मिलीलीटर प्रति लीटर या इण्डोसल्फान 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से मिलाकर समय – समय पर 15 दिन के अन्तर पर छिडकाव करना चाहिए ।
3. फोरेट 10 जी या कार्बोफयुरान 3 – जी या सेबीडाल के 10–12 दाने केले की पत्तियों के गोफे में डालना चाहिए ।